Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 2, July-2017, ISSN 2230-7540

समकालीन हिन्दी उपन्यास में साम्प्रदायिकता

Manoj Bala Chauhan[1]* Dr. Harish Chandra Pathak[2]

[1] Young Scientists University

[2] Retd. Prinicipal at Government Degree College, Devprayag University, Tehri Garhwal, Uttrakhand

सार – ***साहित्य जीवन की संचित अनुभूतियो का प्रतिबिम्ब होता है| कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, संस्मरण इत्यादि के माध्यम से मनुष्य अपनी आंतरिक भावनाओ को अभिव्यक्त करता है| समाज में घटने वाली घटनाओ से रचनाकार आंदोलित होता है, और शब्दों के माध्यम से उसे अंकित कर वापस समाज को दे देता है| सहृदय पाठक इन भावनाओ के साथ जुड़ा हुआ महसूस करता है| उपन्यास की खासियत यह है, कि इसमे मनुष्य के पुरे जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जा सकता है| उपन्यास का कैनवास काफी बड़ा होता है, जिसमे जीवन की कई घटनाओ का चित्रांकन एक साथ हो सकता है| उपन्यास की ओर मेरे आकृष्ट होने का कारण भी यही है|***

----------X----------

प्रस्तावना

साम्प्रदायिक दंगो के दौरान घटित बर्बर क्रत्यो तथा अमानवीयता को देखकर साहित्यकारों ने साहित्य की विविध विधाओ में साम्प्रदायिकता की समस्या के पीछे मौजूद ताकतों को बेनकाब करने का प्रयास अपनी रचनाओ में किया है| कविता एवं कहानी में सांप्रदायिक ताकतों की मंशा को उभरा गया है, लेकिन इसके पीछे मौजूद महीन तंतुओ को उभरने में जीतनी सफलता उपन्यास को मिली है, उतनी अन्य विधाओ को नही|

सांप्रदायिकता एक वैश्विक समस्या है, जिसका निदान हर कीमत पर होना जरुरी है| जब यह समस्या रहेगी तब तक स्वस्थ समाज का विकास संभव नही होगा| हिंदी के साहित्यकारों की सबसे बड़ी चिंता समतामूलक स्वस्थ समाज का विकास है| स्त्री, दलित, अल्पसंख्यक इत्यादि की गूंजे हिंदी साहित्य में सुनाने को मिलती है, जो स्वं हिंदी साहित्य के प्रगतिशील नजरिये को दर्शाती है| सांप्रदायिकता के विभिन्न पहलुओ को हिंदी के कथाकारों ने देखा, परखा और अभिव्यक्त किया है| अतएव इसे देखना अत्यंत आवश्यक है, कि हांड़ी के कथाकारों ने साम्प्रदायिकता के किन-किन पहलुओ को उठाया है, और साम्प्रदायिकता को किस- किस रूप में देखा है| अब तक हुए शोध-कार्यो में साम्प्रदायिकता को केवल धर्म के नजरिये से देखने की कोशिश हुई है, जबकि इसके पीछे और भी कई करा मौजूद है|

साहित्य की समीक्षा-

समकालीन भारतीय समाज में साम्प्रदायिकता एक गम्भीर समस्या के रूप में उभरी है| इसलिए इस पर विस्तृत चिंतन करने की आवश्यकता है| अत: धर्म और संप्रदाय के आपसी संबंध पर विचार करते हुए साम्प्रदायिकता तथा धर्म पर भी विचार करना जरुरी है| राष्ट्राबाद और साम्प्रदायिकता को प्राय: एक ही सिक्के के दो पहलु के रूप में देखा जाता है| ऐसे में यह देखना आवश्यक है, की राष्ट्रवाद का साम्प्रदायिकता के साथ क्या संबंध है| किसी भी समाज पर साहित्य का गहरा प्रभाव होता है, साथ ही साहित्य भी समाज में आये परिवर्तनो से प्रभावित हुए बिना नही रह सकता| अतएव समाज और साहित्य के आपसी संबंध को दर्शाते हुए साहित्य में साम्प्रदायिकता के बिन्दुओ की खोज करना आवश्क है|

धर्म और संप्रदाय:-

धर्म आदिम मानव की देंन है| यह वह समय था जब मनुष्य भूखा, नंगा और बर्बर था| ज्ञान से कोसो दूर था| ऐसे समय में समाज में व्यवस्था बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका धर्म ने अदा की है| स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है, कि धर्म का आरम्भ स्वरूप क्या था? इसकी उत्पत्ति किस प्रकार हुई होगी? किसी सभ्य समाज में धर्म की भूमिका क्या थी? और क्या आज भी धर्म की कोई आवश्यकता है जब हम सभ्यता के एक बड़े परिवर्तनगामी मोड़ पर खड़े है? क्या सचमुच धर्म

www.ignited.in

मानव कल्याण के लिए है, या इसके पीछे कोई स्वार्थ भी निहित है? जंहा तक धर्म की परिभाषा स्थिर करने की बात है, यह बड़ा ही कठिन कम है| धर्म की किसी एक सर्वमान्य परिभाषा स्वीकार कर पाना कठिन है| ऐसा इसलिए है, क्योकि कही धर्म संस्कृति से जुड़ा है, तो कही आचार-व्यहवार से| कही धर्म कर्मकांडो से जुड़ा है, तो कही आतंरिक अनुभूति के साथ धर्म का संबंध मन जाता है|

साम्प्रदायिकता और समाज:

आज के दौर की सबसे बड़ी समस्या यह है, कि धर्म पर विचार करनेवाले दो खेमो में बंट गए है| एक खेमा ऐसा है, जो यह समझता है, कि धर्म की आलोचना करना ईश्वर की तौहीन करना है| इसलिए वह धर्म को किसी भी बहस से परे की चीज समझता है| दूसरा खेमा ऐसा है, जो धर्म पर बहस करना चाहता ही नहीं क्योकि उसका मानना है, की यदि वह धर्म पर बहस करता है, तो उसे या तो धार्मिक मन लिया जायेगा या फिर सांप्रदायिक | सत्य यह है कि धर्म पर बात करना या धर्म में विश्वास रखने का मतलब साम्प्रदायिक होना नही है| धर्म के नाम पर जब हठवादिता कट्टरता स्थान ग्रहण कर लेती है, तब उसमे विकृति आ जाती है| जब वह मनुष्य को पूर्णरूप से अपना अनुगामी बना लेता है, एवं दुसरे धर्म के प्रति असहिष्णु बना देता है, तब उसमे साम्प्रदायिकता विचारधारा का समावेश हो जाता है|

समस्याए तब उत्पन्न हुई जब धर्म ने संस्था का रूप लिया| जैसे ही धर्म ने संस्था का रूप लिया वंहा व्यक्ति एवं उसके स्वतन्त्र विचारो के लिए कोई भी स्थान नहीं बचा| जिस कारण धर्म जिसकी स्थापना समाज में व्यवस्था बनाये रखने के लिए की गयी थी, वही धर्म स्वयं ही समाज में अव्यवस्था फ़ैलाने लगा| दुसरे धर्मो के प्रति सद्भाव के अपने मूल मंत्र से चुकाने लगा | जिस कारण धर्म के मूल स्वभाव में भी परिवर्तन की मांग की| जिस कारण मनुष्य ने अपने विवेक को भी खो दिया | प्रसिद्ध विद्यान विमल थोरात के विचार इस संबंध में द्रष्टव्यहै:- “एक धर्म, एक संप्रदाय, एक गोत्र में रक्त की शुद्धता की पौराणिक परम्परा को प्रमुखता देकर जनमानस में अलगाववाद, जातिवादी और संप्रदाय की भावना को उकसाया जाता है”|

अक्सर यह देखा गया है, कि धर्म परिवर्तन को लेकर भी सांप्रदायिक शक्तियां काफी हल्ला मचाये रहती है| विचारने योग्य बात यह है कि आखिर ऐसा क्यों ? यदि कोई व्यक्ति अपने धर्म से असंतुष्ट है, तो वह धर्म का त्याग कर ही सकता है| इससे किसी धर्म को क्या आपत्ति हो सकती है| वर्तमान समय में धर्म ने राजनीति का दमन पकड़ लिया है, और राजनीति ने धर्म का चोला धारण कर लिया है| इस संबंध में स्वामी नित्यानंद कहते है:- “वर्तमान समय में धर्म परिवर्तन मोक्ष या प्रभु प्राप्ति के उद्देश्य से नही वरन संख्या बल बढाने के उद्देश्य से किया जाता है| संख्या बल बढाने के राजनीतिक निहितार्थ होते है और इसका लाभ भी सम्बंधित पक्ष को मिलता है|” बर्तमान समय में राजनीति और धर्म दोनों ही अन्योन्याश्रित है| धर्म-परिवर्तन का मुद्दा एक व्यापक चर्चा का विषय है| धर्म-परिवर्तन के कारण स्वयं उसी धर्म में मौजूद होते है, जिसका वह व्यक्ति अनुयायी था, लेकिन इस पर विचार न कर सांप्रदायिक शक्तियाँ अन्य धर्मो के पूजा-स्थलों पर हमला करती है| स्वयं हिन्दू धर्म को ले तो मुख्य रूप से धर्म परिवर्तन करने वालो में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगो की भरमार है| सदियों से ये पददलित किये जाते रहे है| पहचान के संकट एवं न्यूनतम सुविधाओ के आभाव में जीने के लिए मजबूर है| ऐसे लोग ही धर्म परिवर्तन की चपेट में आसानी से आ जाते है| सवाल यह भी उठाना चाहिए कि हिन्दू धर्म से जिन लोगो का धर्म परिवर्तन किया जा रहा है, उस पर तो काफी बबाल मचा रहता है, परन्तु ये सांप्रदायिक शक्तियाँ उन लोगो पर क्यों चुप्पी साधे रहती है, जो अन्य धर्मो से धर्मांतरण कर हिन्दू धर्म में शामिल हो रहे है? धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया को समाज की एक स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए | अगर कोई कही एक धर्म में धर्मांतरण कर रहा होता है| इस प्रकार धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया समाज की सहज प्रक्रिया है|

उपसंहार:-

समकालीन हिंदी उपन्यास में साम्प्रदायिकता विषय पर कार्य करते हुये कुछ महत्वपूर्ण बाते सामने निकलकर आती है| सबसे पहली बात तो यह कि धर्म की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न मत मौजूद है| भारतीय मनीषा में धर्म को कर्म के साथ जोड़कर देखने की परम्परा रही है| मनुष्य के आचार-विचार-व्यवहार के साथ धर्म को जोड़कर देखा गया है, वही पाश्चात्य जगत में धर्म की उत्पत्ति के कारणों को खोजने की कोशिश की गई है| साथ ही साम्प्रदायिकता के साथ धर्म को जोड़कर देखा जाता है, जब कि धर्म का साम्प्रदायिकता के साथ कुछ भी लेना-देना नहीं है| किसी भी धर्म में अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति बैमनस्य का भाव रखने जैसी बाते नहीं कही गई है| दुसरे धर्मो का आदर करने जैसी बात हर धर्म के अनुयायी ने दुसरे धर्म के अनुयायी को घृणा की द्रष्टि से देखा है| एक धार्मिक व्यक्ति साम्प्रदायिक नहीं भी हो सकता है, जबकि एक नास्तिक व्यक्ति भी साम्प्रदायिक हो सकता है| जैसे महात्मा गाँधी और मोलाना अबुल कलाम आजाद, दोनों ही धार्मिक प्रवृति के लोग थे, परन्तु इन दोनों को साम्प्रदायिक नहीं कहा जा सकता, जबकि मुहम्मद अली जिन्ना, जो धार्मिक नहीं थे मगर उनके विचार साम्प्रदायिक जरुर थे|

www.ignited.in

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आरिफ, मो. उपयात्रा राधा कृष्णा प्रकाशन नई दिल्ली 2006

2. कमलेश्वर राजपाल एंड संज 2007

3. गुजराल, तरसेम "जलता हुआ गुलाव" वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2002

4. प्रेमचंद्र "रंगभूमि" प्रकाशन संथान, नई दिल्ली 2008

5. रजा, राही मासूम "आधा गाँव" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2004

Corresponding Author

Manoj Bala Chauhan*

Young Scientists University